रजिस्ट्री सं० डी० (डी०)-72

REGISTERED No. D. (D.)-72

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 180] नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 4, 1979/भाद्र 13, 1901

No. 180] NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 4, 1979/BHADRA 13, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मन्त्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 4 सितम्बर, 1979

संख्या 3/5/79-पब्लिक.—आयरलैंड के तट से कुछ दूर समुद्र में अर्ल माउंटबेटन की 27 अगस्त, 1979 को हुई दुखद मृत्यु से भारत ने एक ऐसा सच्चा मित्र खो दिया है जिसने 1947-48 के दौरान 15 महीने की अल्पावधि में ही भारतीय जनता का अगाध स्नेह प्राप्त कर लिया था ।

लुइस माउटबेटन का जन्म 25 जून, 1900 को एक शाही परिवार में हुआ और उनकी शिक्षा लाकर्स पार्क, आसबोर्न, डार्टमाउथ और क्राइस्ट कालेज, कैम्ब्रिज में हुई । वे मई, 1913 मे रायल नैवी में कैडेट के रूप में शामिल हुए और उसमें उनका सेवाकाल अत्यन्त विशिष्ट रहा । दूसरे विश्व युद्ध के दौरान वे दक्षिण-पूर्व एशिया कमान के सुप्रीम अलाइड कमान्डर थे ।

फरवरी, 1947 में, ब्रिटिश सरकार ने "जून, 1948 से पहले किसी तारीख को राजसत्ता भारतीयों को सौंप देने के लिए आवश्यक कार्यवाई करने के अपने इरादे" की घोषणा की । इस कार्य को पूरा करने के लिए लार्ड वावेल के बाद भारत के वायसराय के रूप में लार्ड माउटबेटन को चुना गया । 24 मार्च, 1947 को उन्होंने भारत के वायसराय और गवर्नर जनरल का पद सम्भाला । वे भारत में एक उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में आए । बड़ी कठिनाई और संकट के समय से गुजरते हुए उनकी प्रतिष्ठा अन्य अनेक व्यक्तियों के विपरीत, जो कि भारत के अतीत में विलीन हो गए, बढ़ती ही गयी । वे स्वयं यह नहीं चाहते थे कि उन्हें ब्रिटिश राज के अंतिम वायसराय के रूप में स्मरण किया जाए बल्कि वे चाहते थे कि उन्हें नए भारत का मार्गदर्शन तथा नेतृत्व करने वाले प्रथम व्यक्ति के रूप में याद किया जाए । उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व, अथाह शक्ति, दृढ़ता, आशावादिता और भारत के प्रति अटूट मित्रता के कारण ही उनकी ये कामना पूरी और सफल हुई ।

पद ग्रहण करने के छः महीने की अवधि के भीतर ही 15 अगस्त, 1947 को सत्ता हस्तांतरित करने में लार्ड माउटबेटन ने जो महान भूमिका निभायी, उसका इतिहास साक्षी है । भारत के स्वतन्त्र होने पर उन्हें स्वतन्त्र भारत का पहला गवर्नर जनरल बनने के लिए आमंत्रित किए जाने का अपूर्व गौरव प्राप्त हुआ । भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं की शक्ति और उद्देश्य के प्रति सत्य निष्ठा के बारे में अपनी गहरी समझ के कारण ही वे भारत-ब्रिटिश संबंधों के क्षेत्र में महान ऐतिहासिक समझौता कराने में सफल हुए । महात्मा गांधी के धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद से अत्यन्त प्रभावित होकर

उन्होंने गांधी जी को इन शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की कि वे विवेकरहित घृणा से जर्जरित राष्ट्र में आशा और उल्लास का संचार करने वाले "एकमात्र सशक्त व्यक्ति" थे। लार्ड और लेडी माउंटबेटन ने भारत में अपने 15 मास के वास के दौरान इस देश के प्रति मैत्री और सद्भावना के रूप में जो उपलब्धि अर्जित की है, वह इस देश के इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय बन गई है।

21 जून, 1948 को भारत के गवर्नर जनरल का पद छोड़ने पर लार्ड माउंटबेटन सामरिक नौसेना सेवाओं में वापस चले गए और रायल नेवी में उन्हें और अधिक सफलता प्राप्त हुई। अप्रैल, 1955 में उन्हें फर्स्ट सी लार्ड और 1958 में यूनाइटेड किंगडम की रक्षा सेनाओं का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। तथापि, मानवीय शोक से वे अछूते नहीं रह सके और 21 फरवरी, 1960 को रेड क्रास तथा सेंट जान अम्बुलेंस ब्रिगेड से सम्बन्धित कार्यों के सम्बन्ध में किये गए थकानपूर्ण दौरे के समय बोर्नियो में उनकी पत्नी लेडी एडविना माउंटबेटन की मृत्यु हो गई। लार्ड माउंटबेटन ने 1965 में स्वयं सामरिक सेवा छोड़ दी, लेकिन भारत के प्रति उनकी गहरी और सक्रिय अभिरुचि बनी रही।

भारतवासी तथा भारत सरकार अर्ल माउंटबेटन की स्मृति में अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं और उनकी मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करते हैं। भारत के प्रति उनका लगाव, स्नेह और मित्रता की छाप चिरकाल तक भारतवासियों के हृदयों में बनी रहेगी।

टी. सी. ए. श्रीनिवासवरदन, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 4th September, 1979

No. 3/5/79-Pub.—In the tragic death, at sea, off the Irish Coast, on 27th August, 1979, of Earl Mountbatten, India has lost a genuine friend, who, in a short period of 15 months during 1947-48, succeeded remarkably in winning the love and affection of the people of India.

Born on 25th June, 1900 in a royal family, Louis Mountbatten was educated at Locker's Park, Osborne, Dartmouth and Christ's College, Cambridge. He joined as a cadet in May, 1913, and had a most distinguished career in the Royal Navy. He was the Supreme Allied Commander, South East Asia Command, during the Second World War.

In February, 1947, the British Government announced "their definite intention to take the necessary steps to effect the transfer of power into Indian hands by a date not later than June 1948". Lord Mountbatten was chosen as the Viceroy of India in succession to Lord Wavell to accomplish the task. On 24th March, 1947, he assumed office as the Viceroy and Governor General of India. He came to India with a high reputation. Living through a period of great difficulty and crisis, his reputation, unlike many others which founded in India, only became greater. He himself did not wish to be remembered as the last Viceroy winding up the British Raj but as the first to lead the way to New India. It was his irresistible charm, his indomitable energy, perseverance, optimism and the unwavering friendship for India that made his wish come true.

History is witness to the role Lord Mountbatten played in bringing about the transfer of power on 15th August, 1947 within a period of six months of his assumption of office. When India became independent, he had the unique honour of being invited to remain as the first Governor General of Free India. His profound understanding of the strength and sincerity of purpose of the leaders of the Indian freedom movement enabled him to bring about one of the greatest reconciliations of history in the field of Indo-British relations. Mahatma Gandhi's secular humanism moved him to pay his tribute to Gandhiji as the "one-man boundary force" bringing hope and cheer to a nation smitten by senseless hatred. What Lord and Lady Mountbatten achieved in the way of friendship and goodwill during their 15 months' stay in India has become an unforgettable chapter in the history of the country.

On relinquishing the Governor Generalship of India on 21st June, 1948, Lord Mountbaten returned to active naval service and further success awaited him in the Royal Navy. In April 1955, he was appointed the First Sea Lord and in 1958, the Chief of the Defence Forces in the United Kingdom. He was not, however spared human sorrows, and on 21st February, 1960, his beloved wife, Lady Edwina Mountbatten died in Borneo in the course of an exhausting tour devoted to the affairs of the Red Cross and St. John Ambulance Brigade. Lord Mountbatten himself left active service in 1965, but continued to maintain his close and active interest in India.

The people and Government of India pay their grateful homage to the memory of Earl Mountbaten, whose death they mourn with profound sorrow, and memories of whose charm, and love and friendship for India they will cherish for ever.

T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secretary

Ex. No 150
Pt I Sec I

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054 1979